International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

वैश्वीकरण एवं संस्कृति : समाज वैज्ञानिकों की अध्ययन दृष्टि

महेन्द्र कला
शोधार्थी
अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर

प्रस्तावना

वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने संस्कृति को कई उप संस्कृतियों में विभाजित कर दिया है। जहाँ एक तरफ इसने विश्व गांव और विश्व शहर की अवधारणाओं को बल दिया है, वहीं समाज में कई क्षेत्रों में परिवर्तन करते हुए नवीन उप संस्कृतियों यथा मीड़िया संस्कृति, कॉरपोरेट कल्चर को जन्म दिया है। वैश्वीकरण का संबंध निम्न तथ्यों से विवेचित कर यह स्पष्ट किया जा रहा है कि वैश्वीकरण एवं संस्कृति किस प्रकार सहसंबंधित एवं प्रभावित है।

आधुनिक संस्कृति – आधुनिकता का अर्थ सर्वथा नवीनता से लिया जाता है। प्रत्येक कालखंड में भौतिक और अभौतिक संस्कृति में जो भी नवीन परिवर्तन होते आए वह आधुनिकता से जुड़ते चले गए। आधुनिकता प्रत्येक काल में बनी रहती है। वैश्वीकरण ने भौतिक संस्कृति को अपनी नवीन तकनीकियों से तो आधुनिक बनाया ही है, वहीं इसका प्रभाव स्थानीय संस्कृति के तत्वों, मूल्यों और प्रतिमानों एवं मानदण्डों पर दिखाई पड़ता है।

नवीन सामाजिक संरचनाएँ – वैश्वीकरण ने समाज में नवीन संरचनाओं को जन्म दिया है। बढ़ते परसंस्कृतिग्रहण और आवश्यकताओं ने परिवार और विवाह की नवीन संरचनाएं प्रस्तुत की है। लिव–इन–रिलेशनशिप इसी प्रकार की नवीन सामाजिक संरचना है जो विवाह और परिवार का एक नया ही रूप प्रस्तुत कर रही है।

प्रौद्योगिकीय संस्कृति – वैश्वीकरण जिस प्रकार नए व्यवसायिक क्षेत्र खोल रहा है और वैश्विक रोजगार उपलब्ध करवा रहा है वहीं वैश्विक व्यवसायिक संस्कृति या प्रौद्योगिकीय संस्कृति को प्रस्तुत कर रहा है। आज निजी कंपनियों में काम करने वाले लोगों की भाषा, वस्त्र, रहन–सहन, जीवनशैली और विचार एक नई उप संस्कृति को रच रहे है। इसी प्रकार वैश्वीकरण ने वैश्विक मजदूर वर्ग को जन्म दिया है और इस मजदूर वर्ग में भी कई स्तरों के मजदूर है और सभी की स्वयं की निजी उप संस्कृति है। इस मजदूर वर्ग में वर्ग चेतना है लेकिन निजी स्तर तक ही। इस प्रकार वैश्वीकरण ने मजदूर वर्ग को भी संस्कृति के आधार पर अलग–अलग कर दिया है। इस प्रकार प्रौद्योगिकीय संस्कृति एक उप संस्कृति तो है ही लेकिन इसमें भी कई उपवर्गीय संस्कृतियां सम्मिलित होती है।

अंतर्राष्ट्रीय सांस्कृतिक जीवनशैली – वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक तत्वों के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इससे स्थानीय सांस्कृतिक प्रतिमानों का लोप अवश्य हो रहा है। जहाँ एक तरफ वैश्वीकरण कई उप संस्कृतियां गढ़ने में लगा हुआ है वहीं इसने एक सांस्कृतिक जीवनशैली को जन्म दिया है। संपूर्ण विश्व में वेलेंनटाइनस डे, रोज डे, मदर्स डे, फादर्स डे और फ्रेण्डशिप डे इस प्रकार मनाए जाते है कि यह विश्व संस्कृति का हिस्सा लगते है। विश्व में फैशन चाहे वह खाने में हो या कपड़ों में एक समान रूप से विश्व में अपनाया जा रहा है। वैश्विक आपदाओं में भी पूरा विश्व एक साथ खड़ा नजर आता है। इस प्रकार वैश्वीकरण विश्व समानता में भी योगदान दे रहा है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

ज्ञान संस्कृति विस्फोट – आज वैश्वीकरण इंटरनेट, मीड़िया आदि के माध्यम से और भी अधिक तेजी से बढ़ रहा है। इन सुविधाओं ने पूरे विश्व को हथेली में लाकर रख दिया है। संचार माध्यमों के कारण विश्व में किसी तरह की जानकारी और ज्ञान प्राप्त करना अत्यंत ही आसान हो गया है जिसे ज्ञान संस्कृति विस्फोट का नाम दिया है। इसके कारण कोई भी व्यक्ति किसी भी देश की संस्कृति और जानकारी से अछूता नहीं रहा है। इससे विश्व एक छोटा सा घर प्रतीत होने लगा है।

खुलापन – वैश्वीकरण ने सांस्कृतिक खुलेपन को बढावा दिया है। यहाँ फैशन और कपड़ों के नाम पर शरीर के खुलेपन से तात्पर्य नहीं है। यहां खुलेपन से तात्पर्य है कि वैश्वीकरण ने वैचारिक सोच को खुलापन दिया है और व्यक्ति में निजता का हास किया है। ट्विटर और फेसबुक पर लोग अपनी निजी बातें पूरी दुनिया के सामने बता देते है। लोग अपने विचार ब्लॉग पर लिख कर पूरी दुनिया को बता देते है। लोग एक दूसरे के विचारों पर इंटरनेट पर चर्चा करते है। संबंधों में भी विपरीत लिंगियों की मित्रता में खुलापन आया है, विवाह और परिवार में परिहार संबंधों में खुलापन आया है।

मीड़िया यथार्थ – वैश्वीकरण में मीड़िया की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। मीड़िया संपूर्ण जानकारी का स्त्रोत बना हुआ है और मीड़िया ने लोगों के सामने एक काल्पनिक दुनिया लाकर खड़ी कर रखी है। उसकी खबरों में कितनी सच्चाई है यह लोग जानना नहीं चाहते वह मीड़िया के द्वारा बताई गई बात को ही सच मानते है और इसे मीड़िया ही वास्तविक चीज से समाज को दूर ले जाकर जो काल्पनिक यथार्थ रच रहा है उसे ही मीड़िया यथार्थ कहा जाता है।

आज टीवी पर आ रहे डेली सोपऑपेरा में जो भी दिखाया जाता है वह भारत के परिवारों की छवि पेश करता है लेकिन वह भारतीय परिवारों की यथार्थ स्थिति नहीं है परंतु बाहर के लोग तो इसे ही यथार्थ मान रहे है। यहीं नहीं भारत के लोग भी इस मीड़िया यथार्थ से प्रभावित हो रहे है। जिससे संबंधों पर प्रभावा पड़ने लगे है। वैश्वीकरण ने संबंधों को जड़ता को समाप्त करते हुए उनमें गतिशीलता को बढ़ावा दिया है। आज किसी पिता–पुत्र के संबंध केवल परम्परागत पिता–पुत्र की तरह नहीं रहे है।

राजनीतिक चेतना – वैश्वीकरण ने राजनैतिक चेतना को बढ़ावा दिया है। विश्व के कई देशों में हो रहे राजनैतिक आंदोलनों और प्रभावों को मीड़िया ने पेश किया है। जिससे स्थानीय लोगों में भी राजनीतिक चेतना आई है।

व्यक्तिवादिता – जहां एक तरफ वैश्वीकरण विश्व को एक कर रहा है लोगों को मिला रहा है वहीं इसने व्यक्तिवादिता को जन्म दिया है। आर्थिक उन्नति और नए व्यवसायिक मूल्यों ने जीवन मूल्यों को हास कर दिया है। सफलता के नए आयाम गढ़ दिए गए है धर्म को भी आर्थिक उन्नति से जोड़ दिया गया है। जिससे व्यक्तिवादिता में बढोतरी हो रही है और सामाजिकता में कमी आ गई है। अब सामाजिकता केवल फेसबुक पर ही दिखाई देती है यथार्थ रूप से यह समाप्त हो रही है।

आगे वैश्वीकरण पर प्रमुख समाजशास्त्रियों के अध्ययनों की विवेचना की जा रही है–

एन्थोनी गिडेन्स[1] वैश्वीकरण के सैद्धांतीकरण में एन्थोनी गिडेन्स का योगदान महत्वपूर्ण है। उन्होनें अपनी पुस्तक 'दि कान्सीक्वेसेज ऑफ मॉडरनिटी (1990) में वैश्वीकरण की व्याख्या विस्तारपूर्वक की है। उनका कहना है कि ''आधुनिकता का बहुत बडा परिणाम वैश्वीकरण है। इसलिए कि वैश्वीकरण में समय और स्थान को सामाजिक जीवन में नए सिरे से परिभाषित किया गया है।'' गिडेन्स इसे समय–स्थान

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

दूरीकरण कहते है। अपनी इस अवधारणा के स्पष्टीकरण में वे कहते है कि आज की दुनिया में संचार और उत्पादन तथा विनिमय की जो जटिल व्यवस्था बनी है उसने संपूर्ण स्थानीयता को कमजोर कर दिया है। उदाहरण के लिए खनिज पदार्थों का विश्व में जो भाव है वह स्थानीय खदान श्रमिको को अधिक पगार दिलवा सकता है या उन्हें बेरोजगार कर सकता है।

यहां गिडेन्स और हार्वे[2] (1989) वैश्वीकरण की व्याख्या अन्योन्याश्रितता या व्यक्तियों, दोनों और देशों की पारस्परिकता के संदर्भ तथा समय और स्थान की फ्रेमवर्क में करते है, वहीं तीन और समाजशास्त्री है जो इस अवधारणा की परिभाषा पूंजीवाद, तकनीक और शक्ति की राजनीति के माध्यम से करते है।

पहले समाजशास्त्री वेलरस्टेन[3] है। इन्होनें 'हिस्टोरिकल केपिटेलिज्म' (1983) पुस्तक में इस प्रबंध को रखा है कि ''पूंजीवाद में एक खास प्रकार की ऐतिहासिकता है जिसमें यह अपने उत्पादन को समय और स्थान के साथ में बांध लेता है।'' वे कहते है कि पूंजीवाद अनिवार्य रूप से वैश्वीय है। दूसरा उद्‌गम 16वीं शताब्दी में हुआ और तब से आज तक इसने अपना विस्तार वैश्वीय स्तर पर ही किया है। वेलरस्टेन यह स्थापित करते है कि अपनी वैश्वीय प्रकृति के कारण पूंजीवाद कभी भी किसी स्थान विशेष से जुडा नहीं रहा है। यह हमेशा सार्वभौमिक रहता है। अपना विश्लेषण प्रस्तुत करते हुए वेलरस्टेन कहते है[4] –

वैश्वीकरण को आगे ठेलने वाली शक्ति और इसमें निहित जो तर्क है, वह पूंजीवाद विश्व अर्थव्यवस्था है।

वेलरस्टेन की पूंजीवाद की व्याख्या जो उन्होनें अपनी पुस्तक में रखी है, इसके अनुसार वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसका कारण पूंजीवाद का विस्तार और उसकी समृद्धि है। बहुत सामान्य शब्दों में वैश्वीकरण की वेलरस्टेन की परिभाषा गिडेन्स और हार्वे से अलग है। अगर समय और स्थान का दूरीकरण हुआ है तो इसका कारण पूंजीवाद की विश्व अर्थव्यवस्था है। आज वैश्वीकरण का जनक पूंजीवाद है।

दूसरे समाजशास्त्री जिन्होनें वैश्वीकरण की परिभाषा हटकर दी है वे है रोजेनाऊ[5]। उन्होनें तकनीकी तंत्र के संदर्भ में वैश्वीकरण की पड़ताल की है। इस संदर्भ में उनकी पुस्तक 'टरब्यूलेंस इन वर्ल्ड पोलिटिक्स' (1991) उल्लेखनीय है। उसका तर्क है कि आज दुनिया पारस्परिकता है, अन्तर्निर्भरता है, इसका कारण तकनीकी तंत्र है। वे लिखते है कि

''यह तकनीकी तंत्र ही है जिसने भौगोलिक और सामाजिक दूरियों को घटा दिया है और इसके पीछे जेट हवाई जहाज, कम्प्यूटर, दुनिया का चक्कर काटने वाले लाइट और ढेर सारे नए–नए आविष्कार है। इन्हीं के कारण वस्तु और विचार दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक पहुँच जाते है। यह तकनीकी तंत्र ही है जिसने स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समुदायों में अन्तर्सम्बंध स्थापित किया है।''

रोजेनाऊ तकनीकी तंत्र के साथ अंतर्राष्ट्रीय राजनीति को भी जोडते है। वे कहते है कि औद्योगीकरण के बाद जो उत्तर–औद्योगीकरण युग आया इसके पीछे बहुत बडी धारणा दुनिया के लोगों के काम करने की दशाओं में सुधार लाना था। सुधार की इस बदलती धारणा ने उत्तर–अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को जन्म दिया। अब राष्ट्र–राज्यों के लिए यह आवश्यक हो गया है वे अब अर्न्राष्ट्रीय मंच पर आए और जन कल्याण में जुट जाए। यह इसी धारणा के कारण है कि आज कई अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बन गए है, अर्न्राष्ट्रीय निगम बन गए है। उनका कहना है –

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

''उद्योगवाद और उत्तर–उद्योगवाद आज ऐसी वैश्वीय सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक शक्तियां बन गई है जो वैश्वीकरण का पोषण करती है।''

वैश्वीकरण की व्याख्या करने वाली तीसरे उल्लेखनीय समाजशास्त्री गिलपीन[6] है। उनकी पुस्तक ''दि पोलिटिकल इकोनोमी ऑफ इन्टरनेशनल रिलेशन्स'' (1987) इस संदर्भ में उल्लेखनीय दस्तावेज है। गिलपीन एक कदम रोजनाऊ से आगे है। वे बहुत स्पष्ट है जब वे कहते हे कि ''वैश्वीकरण राजनीतिक कारकों की उपज है, पैदाइश है। आज का अर्न्राष्ट्रीय माहौल कुछ ऐसा है जिसमें प्रत्येक राष्ट्र–राज्य अपने स्थायित्व और सुरक्षा के लिए किसी अर्न्राष्ट्रीय मंच पर आने के लिए तैयार है।'' वास्तव में गिलपीन की धारणा है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया जो आज हमें देखने को मिलती है, एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। आज भी अन्तर्राष्ट्रीय जगत में यह धारणा बनी हुई है कि कुछ राष्ट्र–राज्य प्रभुत्वशाली होते है और कुछ सर्वोत्तम प्रभुत्वशाली – सुपरनेशन स्टेट। ये राष्ट्र–राज्य वैश्वीकरण के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था और संस्कृति को विकासशील राष्ट्र–राज्यों पर थोपना चाहते है। ऐसे प्रभुत्वशाली राष्ट्र–राज्यों के लिए वैश्वीकरण एक उपयुक्त और अनुकूल प्रक्रिया है। संयुक्त राज्य अमेरिका दूसरा एक अच्छा उदाहरण है। वैश्वीकरण उसके लिए सुगम प्रक्रिया है जिसके माध्यम से यह अपने आर्थिक और सांस्कृतिक साम्राज्यवाद की स्थापना कर सकता है। गिलपीन की व्याख्या इस तरह है –

''मैं इस विचारधारा का हूँ कि उदार अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लिए किसी न किसी प्रभुत्व का होना अनिवार्य है। हमारा ऐतिहासिक अनुभव बताता है कि प्रभुत्वशाली उदार शक्ति की अनुपस्थिति में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को पाना बहुत कठिन हे। इसके अभाव में संघर्ष की संभावना बराबर बनी रहती है। आज दुनिया में बाजार की जो सफलता दिखाई देती है वह अनुकूल प्रभुत्वशाली शक्ति के अभाव में संभव नहीं है।''

गिलपीन राजनीतिक अर्थव्यवस्था के विशेषेज्ञ है। अपनी पुस्तक के अंत में वे टिप्पणी करते हुए कहते है कि ''ऐतिहासिक दृष्टि से यूरोप का संपूर्ण इतिहास बताता है कि वैश्वीकरण का घनिष्ट संबंध साम्राज्यों के विस्तार के साथ है लेकिन आज तो कहीं भी साम्राज्यवाद नहीं है।'' फिर गिलपीन वैश्वीकरण की व्याख्या किस तरह करते है। उनका कहना है कि ''आज की दुनिया की व्यवस्था बड़ी उदार है और इसमें प्रभुत्वशाली राष्ट्र बड़ा उदार व्यवहार करते है। ऐसी अवस्था में वैश्वीकरण की व्यापकता का कारण पूंजीवाद के आगे बढ़ते हुए चरण है।''

तीनो विचारक वैश्वीकरण की व्याख्या अपने–अपने ढंग से करते है। इनकी व्याख्या के केन्द्रीय चर पूंजीवाद, तकनीकी तंत्र का विकास और शक्ति की राजनीति है। इधर वैश्वीकरण के कतिपय अन्य सिद्धांतवेत्ताओं ने वैश्वीकरण को एकीकृत रूप में समझने की कोशिश की है। इन विचारकों में गिडेन्स और रोबर्स्टन विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

गिडिन्स[7] ने वैश्वीकरण का विश्लेषण किसी एक चर या कारण की अपेक्षा बहुकारकों द्वारा किया है। मुख्य रूप से वे इसकी परिभाषा चार कारकों द्वारा करते है – 1. पूंजीवाद 2. अन्तर्राज्य व्यवस्था 3. सैन्यवाद 4. उद्योगवाद। वास्तव में वैश्वीकरण का विस्तार गिडेन्स के अनुसार इन चार तत्वों से जुडा हुआ है। देखा जाए तो ये चार तत्व आधुनिकता के तत्व है और इसलिए वैश्वीकरण स्वयं आधुनिकवाद में निहित है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

रोबर्स्टन[8] वैश्वीकरण के सिद्धांत निर्माण में गिडेन्स से सहमत नहीं है। उनका उपागम दूसरा है। वे पूंजीवाद, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों, सैन्यवाद और उद्योगवाद के पारस्परिक संबंधों को वैश्वीकरण की व्याख्या में सम्मिलित नहीं करते। वे कहते है कि ''हमें वैश्वीकरण में जो सार्वभौमिकता और स्थानीयता दिखाई देती है, उन दोनों का विश्लेषण करना होगा। अगर हम वैश्वीकरण की परिभाषा को सिद्धान्तिक स्तर पर देखें तो हमें दो सम्प्रदाय स्पष्ट रूप से दिखाई देते है एक सम्प्रदाय उन विचारकों को है जो वैश्वीकरण की व्याख्या किसी एक कारक या कारण के माध्यम से करता हैं दूसरा सम्प्रदाय उन विचारकों का है जो वैश्वीकरण को बहु–कारक के उपागम द्वारा देखता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि वैश्वीकरण एक जटिल प्रक्रिया है और समाजशास्त्री बराबर दूसरी व्याख्या में जुटे हुए हैं।''

मेलकॉम वाटर्स[9] की पुस्तक ''ग्लोबेलाइजेशन'' (1995) एक बहुचर्चित और उल्लेखनीय ग्रन्थ समझा जाता है। यह पुस्तक के दो वर्षों के बीच में चार संस्करणों में छप गई। किसी भी लेखक की पुस्तक का ऐसा प्रत्युतर एक उल्लेखनीय घटना समझा जाता है। मेलकाम आग्रहपूर्वक कहते हैं कि ''वैश्वीकरण की परिभाषा आज भी अधरझूल में है। लोग इसका बड़ा चलता–फिरता अर्थ निकालते हैं। वह वस्तु जो सभी जगह उपलब्ध है, लोग कहते हैं : वैश्वीय है। अगर दो पहियों वाली साईकिल दुनिया भर में मिलती है तो यह वैश्वीय है। अकादमिक क्षेत्र में भी इस अवधारणा ने कई ठोकरें खाई हैं, उठी हैं और फिर गिरी भी है।'' इस ऊहा पोह में यह बहुत स्पष्ट है कि रोबर्टसन ने सबसे पहली बार इस अवधारणा को समाजशास्त्र में स्थापित किया। उन्हें इसका जनक कहा जा सकता है।

मेलकाम वैश्वीकरण की अवधारणा को बड़े खुलासे के रखने का प्रयास किया है। इन प्रक्रिया में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अन्तः क्रियाओं का पर्याप्त समावेश होता है। इस प्रक्रिया में भूगोल तथा राष्ट्रय सीमाओ के जो दबाव और बंधन होते हैं धुमिल हो जाते हे। सब कुछ खुला हुआ।

मेलकॉम की वैश्वीकरण की परिभाषा इस तरह है :

''वैश्वीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिस में सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवस्था पर जो भौगोलिक दबाव होते है, पीछे हट जाते हैं और लोग भी इस तथ्य से अवगत हो जाते हैं कि अब भूगोल की सीमाएं बेमतलब हैं।''

वैश्वीकरण की अवधारणा कोई दस वर्ष पुरानी है पर इसकी लोकप्रियता उतर–आधुनिकता से भी अधिक है। इसकी समानार्थक कई अन्य अवधारणायें भी हैं जिनका अर्थ थोड़ा बहुत भिन्न हैं। ये अवधारणायें वैश्वीकरण से ही निकली हैं लेकिन इनका अर्थ विशिष्ट है। यहां हम कुछ ऐसी अवधारणाओं का उल्लेख करेंगे जिनका उद्‌गम वैश्वीकरण है।

संयुक्त राष्ट्र संघ विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रकाशित मानव संसाधन रिपोर्ट, (1960)[10] में यह कहा गया है कि ''आधुनिक युग वस्तुतः वैश्वीकरण का युग है। यह रिपोर्ट कहती है कि वैश्वीकरण दुनिया के लिये नया नहीं है। इसका प्रारम्भ 16वीं शताब्दी से है।'' लेकिन आज का वैश्वीकरण अतीत के वैश्वीकरण से भिन्न है। इस रिपोर्ट ने वैश्वीकरण को चार विशेषताओं द्वारा परिभाषित किया है:

1. नये बाजार : विदेशी विनिमय और पूंजी बाजार वैश्वीय स्तर पर जुड़े हुए हैं और ये बाजार चौबीसों घंटे काम करते हैं। इनके लिये भौतिक दूरियां कोई अर्थ नहीं रखती।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

2. नये उपकरण : आज के विश्व में लोगों के लिये कई नये उपकरण आ गये है। इनमें इन्टरनेट लिंक्स, सेल्यूलर फोनस और मीडिया तंत्र सम्मिलित हैं।
3. नये एक्टर या कर्ता वैश्वीकरण की प्रक्रिया ऐसी है जिसमें कार्यों का संपादन करने के लिये कई कर्ता हैं। इन कर्ताओं में विश्व व्यापार संगठन, गैर सरकारी संगठन, रेडक्रास आदि सम्मिलित हैं।
4. नये नियम : अब सारे काम संविदा के माध्यम से होते है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां दुनिया भर के राष्ट्र–राज्यों के साथ सीधा व्यापार समझौता करते हैं। हमारे देश में अमेरिकी बहुराष्ट्रीय एनरोन कम्पनी ने महाराष्ट्र सरकार के साथ बिजली की आपूर्ति के लिये समझौता किया था। इसी तरह के समझौते अन्य देशों के साथ भी होने हैं। ये कतिपय नये नियम हैं जो वैश्वीकरण के आर्थिक और सांस्कृतिक, कार्यक्रमों को लागू करने में सहायता देते हैं।

मानव संसाधन विकास की यह रिपोर्ट बताती है कि अपने नये अवतार में वैश्वीकरण अधिक शक्तिशाली बन गया है। इसे अधिक स्पष्ट करते हुए रिपोर्ट कहती है:

''वैश्वीय बाजार, वैश्वीय तकनीकी तंत्र, वैश्वीय विचार और वैश्वीय सुदृढ़ता, यह आशा की जा सकती है, संसार भर के लोगों को समृद्धि देंगे। लोगों के बीच की पारस्परिकता और अन्तर्निर्भरता में यह आशा की जाती है कि लोग साझा मूल्यों में विश्वास स्थापित करेंगे और दुनिया भर के लोगों का विकास होगा।''

हम समझते हैं, हमने वैश्वीकरण के अर्थ को स्पष्ट करने के लिये बड़े विस्तृत प्रयास किये हैं। कुल मिलाकर अब हम इस स्थिति में हैं कि यह निश्चयपूर्वक कह सकें कि यह अवधारणा बड़ी जटिल है। इसके अर्थों में द्वन्द्व है। यह स्थानीयता और सार्वभौमिक को आमने–सामने कर देती है। इस प्रतिरोध के होते हुए भी यह सभी मानते हैं कि वैश्वीकरण की अवधारणा में समय और स्थान एकदम सिमट गये हैं। इस अवधारणा की परिभाषा आज की स्थिति में बहस में घिर गई है। इस बहस में कुछ विचारकों का कहना है कि वैश्वीकरण को केवल एक कारक या एक चर द्वारा समझाया जा सकता है। दूरीकरण द्वारा करते हैं। इसी सम्प्रदाय के हार्वे भी गिडेन्स की समय–स्थान के प्रबन्ध को स्वीकार करते हैं। बेल स्टेन वैश्वीकरण की व्याख्या पूंजीवाद के संदर्भ में करते हैं और रोजेनाऊ तकनीकी तंत्र के विकास के साथ। गिलपीन वैश्वीकरण को शक्ति की राजनीति के साथ जोड़ते हैं। ये सब लेखक वैश्वीकरण की व्याख्या केवल एक–कारक द्वारा करते हैं। बहस का यह एक पृथक सम्प्रदाय है।

बहस का दूसरा सम्प्रदाय उन विचारकों का है जो यह मानकर चलता है कि वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो अनिवार्य रूप से बहुलवादी है। वैश्वीकरण केवल एक आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक प्रक्रिया ही नहीं है। यह बहुआयामी है। इसके कई रूप हैं, कई स्वरूप हैं, कई अवतार हैं। इस सम्प्रदाय के लेखकों में रोबर्स्टन ओर मेलकॉम प्रमुख हैं। आज भी वैश्वीकरण की यह प्रक्रिया अपने निर्माणावस्था से गुजर रही है। इसे चुनौती दी जाने लगी है। विकासशील देशो के लोग वैश्वीकरण को आर्थिक और साम्राज्यवादी प्रक्रिया के रूप में देख रहे हैं। इसके विरोध में आन्दोलन हो रहे है। वैश्वीकरण ने स्थानीय संस्कृति के विस्तार और विकास को कमजोर कर दिया है। इन सब कारणों से हम कहते हैं कि इस प्रक्रिया की कोई एक सर्वसम्मत परिभाषा देना कठिन है। लेकिन एक बात स्पष्ट है। यह अवधारणा अपने परिवेश में इतनी विस्तृत है कि इसकी व्याख्या किसी एक कारक द्वारा नहीं की जा सकती। इसकी प्रकृति ही बहुलवादी है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

जेमेसन[11] ने अपनी पुस्तक 'द कल्चर ऑफ ग्लोबलाइजेशन'' (1998) में कहा है कि ''बीसवीं शताब्दी के छठे दशक के बाद संसार में एक ऐसी हलचल मची कि संस्कृति का मानों विस्फोट ही हो गया हो। आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं ने संस्कृति को नये–नये मूल्यों में प्रस्तुत किया। बाजार से लेकर मंदिर और चर्च सभी में संस्कृति की धूम मच गई।'' हमारे देश में जैसा कि हम देखते है सभी और संस्कृति का चमत्कार देखने को मिलता है। नित नये देवताओं का अवतार हो रहा है, जो त्यौहार लुप्त हो गये थे, सतह पर आ गये है। जो त्यौहार चले आ रहे है उनमें नई धूमधाम आ गई है। हुआ यहां तक है कि राज्य और राजनीतिक शक्तियां भी इस नई संस्कृति को धार दे रही है। इस सबका परिणाम यह है कि आज संस्कृति बाजार में बिक रही है। ''कला कला के लिये'' हैं, ''कला स्वयं के सुख के लिये हैं'' जैसे मुहावरे आज अतीत में खो गये है। अब संस्कृति तथा अर्थ व्यवस्था गड्मड् हो गये हैं। दोनों का स्तरीकरण हो गया है। जेमेसन लिखते हैं :

''आज जो हुआ है वह यह है कि सौन्दर्यपरक उत्पादन वस्तु उत्पादन के साथ जुड़ गया है। अब जैसे ही किसी फैशन का उभार होता है, देखते ही देखते फैशन की यह वस्तु बाजार में आ जाती हैं इस तरह सौन्दर्यपरक वस्तु अर्थ–व्यवस्था के साथ जुड़ गई है।''

(द कैपिटल, वोल्यूम–3, द इंटरनेशन पब्लिकेशन, न्यूयार्क, 1894) में मार्क्स संस्कृति और पूंजीवाद के इस घाल–मेल को – गठबन्धन के साथ जोडते है। मार्क्स ने हमेशा अधिकसंरचना की दृष्टि से संस्कृति को हाशिये पर रखा था। वे टी0 वी0, रेडियों, फिल्म या मोटे रूप में उत्पादन, विनिमय और विपणन को आर्थिक क्रियाओं के रूप में देखते थे। उनका विचार था कि जैसे मोटर गाड़ी या कपड़ा बाजार में बेचा जाता है वैसे ही माल मीडिया के साधनों को भी बेचा जाता है। उनकी दृष्टि में मीडिया जिन संकेतों, छवियों को टीवी के माध्यम रखा जाता है वे वस्तु बेचने के माध्यम से वस्तुओं की बिक्री करता है। वस्तुतः माल नहीं बेचा जाता, प्रतिकृतियां या संकेत बेचे जाते है। जेमेसन का अनुमान है कि पूंजीवाद यदि इसी गति से चलता रहा तो एक दिन यह सम्पूर्ण संस्कृति को ही निगल जायेगा।

निष्कर्ष – समाज विज्ञानियों की दृष्टि में वैश्वीकरण और संस्कृति का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो अनिवार्य रूप से बहुलवादी है। वैश्वीकरण केवल एक आर्थिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक प्रक्रिया ही नहीं है। यह बहुआयामी है। इसके कई रूप हैं, कई स्वरूप हैं, कई अवतार हैं।

इन प्रक्रिया में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय अन्तः क्रियाओं का पर्याप्त समावेश होता है। इस प्रक्रिया में भूगोल तथा राष्ट्रय सीमाओ के जो दबाव और बंधन होते हैं धुमिल हो जाते है। आर्थिक और सामाजिक संस्थाओं ने संस्कृति को नये–नये मूल्यों में प्रस्तुत किया। बाजार से लेकर मंदिर और चर्च सभी में संस्कृति की धूम मच गई। हमारे देश में जैसा कि हम देखते है सभी और संस्कृति का चमत्कार देखने को मिलता है। नित नये देवताओं का अवतार हो रहा है, जो त्यौहार लुप्त हो गये थे, सतह पर आ गये है। जो त्यौहार चले आ रहे है उनमें नई धूमधाम आ गई है। हुआ यहां तक है कि राज्य और राजनीतिक शक्तियां भी इस नई संस्कृति को धार दे रही है। इस सबका परिणाम यह है कि आज संस्कृति बाजार में बिक रही है। ''कला कला के लिये'' हैं, ''कला स्वयं के सुख के लिये हैं'' जैसे मुहावरे आज अतीत में खो गये है। अब संस्कृति तथा अर्थ व्यवस्था गड्मड् हो गये हैं। दोनों का स्तरीकरण हो गया है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गिडिन्स, एन्थोनी; (1990) ''द कॉन्सिकवेन्स ऑफ मॉडर्निटी'', यूएसए, स्टेनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं. 205–207।

2. वहीं

3. इमाइल, वाटर स्टेन; (1983) ''हिस्टोरिकल केपेटिलज्मि; वर्सो, बिजनस इकोनॉमिक्स पब्लिकेशन, पृ.सं. 233–235।

4. वहीं

5. जेम्स रोजेनाऊ; (1990) ''टरब्यूलेन्स इन वर्ल्ड पॉलिटिक्स'', प्रिस्टन, प्रिस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं. 334–336।

6. रॉबर्ट, गिलपिन; (1987) ''द पॉलिटिकल ऑफ इंटरनेशनल रिलेशन्स'', प्रिस्टन, प्रिस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं. 338–339।

7. गिडिन्स, वहीं।

8. रॉबर्स्टन; (2010) ''बिटन बाइ टिवलाइटः यूथ कल्चर, मीडिया एण्ड द वेरोपायर ट्रांसचिज्स''; प्रिस्टन, प्रिस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ.सं. 155–159।

9. वहीं।

10. यूएनओ रिपोर्ट ऑन हूयमन रिर्सोस।

11. फ्रेडरिक जेमसन,(1984) ''पोस्टमोर्डनिज्म, ओर द कल्चरल लॉजिक ऑफ लेट कैपिटलिज्म'', न्यू लेफ्ट रिव्यू1 ⁄ 146, जुलाई–अगस्त।